दिनांक 27.05.74 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

❊ यथार्थ और युक्तियुक्त बोल ही सबको लुभाते

❊ व्यर्थ और प्रदूषित बोल कभी ना मन को भाते

❊ ऐसी वाणी बनाओ जो सबके मन को छू जाए

❊ अपने संग संग औरों के मन को खुश कर जाए

❊ अपने हर बोल के बारे में हमें बाप ने समझाया

❊ ऐसे बोल ही बोलो जिसमें हो कल्याण समाया

❊ व्यर्थ बोलकर किसी को श्रापित ना कर जाना

❊ अकल्याण के निमित्त तुम खुद को नहीं बनाना

❊ सम्पूर्ण स्थिति का नतीजा करीब है आने वाला

❊ लेकिन ये नतीजा बाप कभी नहीं बताने वाला

❊ खुद को नम्बर देना अपनी योग्यता के अनुसार

❊ रॉयल चलन रॉयल भाषा होगी जीवन का सार

❊ सम्पूर्ण सत्यता से भरा वायुमण्डल बन जाएगा

❊ सारा ब्राह्मण परिवार शीश महल नजर आएगा

❊ अपनी वाणी को बच्चों महावाक्य तुम बनाओ

❊ सार स्वरूप शब्दों से महान आत्मा कहलाओ